सांध्य दैनिक 4PM

केवल जब रंगों का उचित संतुलन होता है तो एक पेंटिंग बनती है। जीवन बस संतुलन के बारे में है।

-महात्रिया रा

मूल्य ₹ 3/-

जिद...सच की

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 9 ● अंकः 77 ● पृष्ठः 8 ● लखनऊ, शुक्रवार, 21 अप्रैल, 2023

अपनी सरकार के खिलाफ आवाज उठाएं... 7 | कर्नाटक में इस बार भाषा नहीं... 3 | निकाय चुनाव में मिलेगा भाजपा को... 2

कोर्ट में चली गोली, सुरक्षा पर उठा सवाल

दिल्ली के साकेत की है घटना आप ने एलजी पर बोला हमला

कहा- अगर काम नहीं संभल रहा तो इस्तीफा दें उपराज्यपाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के साकेत कोर्ट परिसर में गोली चलने से एक महिला घायल हो गई है । उसके बाद से दिल्ली में राजनीतिक माहौल गरमा गया है। आप ने देश की राजधानी की लचर कानून व्यवस्था पर एलजी वीके सक्सेना को घेरा है। शुक्रवार सुबह साकेत कोर्ट में सनसनीखेज वारदात सामने आई है। साकेत कोर्ट में सुबह एक महिला को गोली मार दी गई।

महिला को गवाही के लिए कोर्ट लाया गया था। एनएससी थाना अध्यक्ष ने महिला को अपनी गाड़ी से अस्पताल में भर्ती कराया है। घटना के बाद दिल्ली पुलिस में हड़कंप मच गया है। सूचना के बाद सारे वरिष्ठ अधिकारी मौके पर पहुंच रहे हैं। बताया जा रहा है कि महिला को एक के बाद एक चार गोली मारी गई हैं। इससे पहले पिछले साल रोहिणी कोर्ट में घुसकर भरी कोर्ट में गैंगस्टर जितेंद्र गोगी की ताबड़तोड़ गोलियां मारकर हत्या कर दी गई थी।

दिल्ली में कानून व्यवस्था पूरी तरह से चरमराई : केजरीवाल

इस मामले को लेकर सीएम अरविंद केजरीवाल ने कहा कि, दिल्ली में कानून व्यवस्था पूरी तरह से चरमरा गयी है, दूसरों के कामों में अड़चन करने और हर बात पर गंदी राजनीति करने की बजाय सबको अपने अपने काम पर ध्यान देना चाहिए और अगर नहीं संभलता तो इस्तीफा दे देना चाहिए, ताकि कोई और कर ले, लोगों की सुरक्षा रामभरोसे नहीं छोड़ी जा सकती है।

पहले भी हो चुकी है ऐसी वारदात

दो साल पहले भी कोर्ट में ऐसी घटना हो चुकी थी, जिसमें वकील की ड्रेस पहन हुए दो शख्स आए और उन्होंने गैंगस्टर जितेंद्र गोगी पर ताबड़तोड़ गोलियां चला दी थीं। टिल्लू गिरोह के शूटरों ने उसकी हत्या की थी।

पुलिस 350 करोड़ के भ्रष्टाचार में डूबी : सौरभ

वहीं साकेत कोर्ट में गोली चलने को लेकर स्वास्थ्य मंत्री सौरभ भारद्वाज ने कहा कि, नये एलजी साब के आने के बाद दिल्ली की क़ानून व्यवस्था लगातार बद से बदतर होती जा रही है, कोर्ट में गोलियां चल रही है, पुलिस 350 करोड़ के भ्रष्टाचार में डूबी हुई है।

साकेत कोर्ट की सुरक्षा पर सवाल

इसके साथ ही सवाल उठ रहा है कि आखिर दिन दहाड़े कोर्ट में शख्स हथियार लेकर कैसे पहुंच गया। कोर्ट के मुख्य गेट पर मेटल डिटेक्टर भी है। इसके बावजूद घटना को अंजाम दिया गया। ऐसे में साकेत कोर्ट में सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सवाल खड़े हो रहे हैं। जिस जगह पर यह वारदात हुई उसके लेकर सवाल उठ रहे हैं। हमला कोर्ट के परिसर में हुआ है। ऐसे में इतनी सिक्योरिटी के बावजूद हमलवार वहां कैसे पहुंच गया। इस मामले में साफ तौर पर सुरक्षा की लापरवाही नजर आ रही है।

शाइस्ता प्रयागराज कोर्ट में कर सकती है सरेंडर!

» **अतीक-अशरफ हत्याकांड : छानबीन में तेजी आई**

» **गोगी गैंग ने दी थीं जिगाना और गिरसान पिस्टलें**

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

प्रयागराज। यूपी एसटीएफ और कई जिलों की पुलिस अतीक अहमद और अशरफ की पत्नी शाइस्ता परवीन और जैनब फातिमा की तलाश में जुटी है, लेकिन दोनों पुलिस को चकमा देकर अपनी लोकेशन बदल रही है। एक पुलिस अधिकारी के मुताबिक, पिछले 14 दिनों में शाइस्ता परवीन की पुलिस को तीन बार लोकेशन मिली, लेकिन वो पुलिस को चकमा देकर भागने में कामयाब रही। सूत्रों के मुताबिक, दो दिनों में शाइस्ता परवीन कोर्ट में सरेंडर कर सकती हैं। अटकलों की मानें तो ये भी कहा जा रहा है कि रमजान माह चल रहा है और शाइस्ता परवीन रोजा हो सकती है। इसलिए सरेंडर नहीं कर रही है। 22 अप्रैल को ईद है। रमजान भी खत्म हो रहे हैं। ऐसे में शाइस्ता परवीन सरेंडर कर सकती है।

अतीक और अशरफ की हत्या करने वाले आरोपियों को कस्टडी रिमांड पर लिया गया है। एसआईटी की टीम कातिलों से लगातार पूछताछ में जुटी है। शूटरों ने कई चौंकाने वाले खुलासे भी किए हैं। हत्याकांड में जिन असलहों का उपयोग किया गया था, वह दिल्ली के कुख्यात जितेंद्र गोगी गैंग से शूटरों को मिले थे। हमीरपुर के शूटर सनी सिंह से पूछताछ में यह खुलासा किया है। हालांकि यह भी कहा जा रहा है कि सनी के इस खुलासे में कितना सच है, यह विस्तृत पूछताछ के बाद ही स्पष्ट हो पाएगा। हर वारदात को अंजाम देने के बाद वह लौट आता था। यही वजह रही कि उसका नाम सामने नहीं आया। यह बात भी सामने आई है कि एक काम के सिलसिले में ही गोगी गैंग ने उसे जिगाना और गिरसान पिस्टलें दी थीं। हालांकि इसी दौरान सरगना गोगी मारा गया। इसके बाद सनी ने पिस्टलें वापस ही नहीं कीं। सूत्रों का कहना है कि फिलहाल यह साफ नहीं है कि पूछताछ में सामने आई यह बातें कितनी सही हैं। यह भी हो सकता है कि कोई बड़ा राज छिपाने के लिए वह यह बातें कर रहा हो। ऐसे में विस्तृत पूछताछ के बाद ही कुछ स्पष्ट हो सकेगा।

शूटरों ने नहीं बताई हत्या की असल वजह

कस्टडी रिमांड के दूसरे दिन एसआईटी सदस्यों ने तीनों शूटरों से तीन घंटे तक पूछताछ की थी। सीन रिक्रिएशन की कार्रवाई के चलते उनसे दोपहर में पूछताछ नहीं हो सकी। हालांकि रात में नौ से 12 बजे तक उनसे सवाल दागे गए। सबसे बड़ी बात यह है कि हत्या की वजह को लेकर शूटरों ने अभी भी अपना मुंह नहीं खोला है। शूटरों का यही कहना है कि उन्हें बड़ा डॉन बनना था।

नारको या लाई डिटेक्टर टेस्ट भी करा सकती है एसआईटी

वहीं, जानकारों का कहना है कि कस्टडी रिमांड में भी हत्याकांड से जुड़े राज न उगलवा पाने पर तीनों शूटरों का नारको या फिर लाई डिटेक्टर टेस्ट भी कराया जा सकता है। हालांकि इसके लिए उनकी मंजूरी जरूरी होगी।

निकाय चुनाव में मिलेगा भाजपा को करारा झटका : अखिलेश

» लिखेगी 2024 के लोस चुनावों से पहले बीजेपी की पराजय की पटकथा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा कि आम जनता निकाय चुनावों में ही भाजपा को करारा सबक सिखाकर वर्ष 2024 के लोकसभा चुनावों में भाजपा की पराजय की पटकथा लिख देगी। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ स्टार प्रचारक बनकर व्यस्त है और उनका प्रशासनतंत्र अपराधियों के आगे पस्त है।

अखिलेश ने कहा कि दिन दहाड़े अपराधिक घटनाएं हो रही है, पर दावा किया जाता है कि प्रदेश में कानून व्यवस्था ठीकठाक है। जनता भी जान गई है कि भाजपा को भ्रामक प्रचार करने में महारत हासिल है। राजधानी लखनऊ में ही जंगलराज के हालात है। कृष्णानगर में बदमाशों ने दिन दहाड़े पिस्तौल की नोक पर एक महिला की चेन लूट ली। कैसरबाग इलाके में व्यापारी से 13 लाख रुपये की लूट हो गई। एक संविदा कर्मी ने नौकरी के नाम पर युवती से वसूली की और दुष्कर्म किया। पारा के बुद्धेश्वर मंदिर पर एक बुजुर्ग की सोने की माला बदमाशों ने लूट ली।

ये घटनाएं तो महज उदाहरण के लिए हैं। प्रदेश में हर दिन लूट, हत्या, छेड़छाड़ और दुष्कर्म की घटनाएं होती हैं। पुलिस ज्यादातर मामलों में पीड़िता की मदद के बजाय अपराधी तत्वों के ही पक्ष में दबाव बनाने का काम करती है। लचर विवेचना और अभियोजन में लापरवाही से तमाम अपराधी छूट जाते हैं। भाजपा राज में कानून व्यवस्था बुरी तरह चौपट है। महिलाएं और बच्चियां असुरक्षित हैं। जनता इस सबसे ऊब चुकी है।

निकाय चुनाव की निगरानी के लिए बनाए प्रभारी

समाजवादी पार्टी ने वाराणसी नगर निगम के महापौर एवं पार्षद चुनाव के लिए पूर्व मंत्री एवं विधायक ओम प्रकाश सिंह को चुनाव प्रभारी नामित किया है। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव की स्वीकृति से प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल ने इसकी घोषणा की। इसके अलावा भदोही के विधायक जाहिद बेग को मिर्जापुर के छानबे विधानसभा उपचुनाव की संचालन समिति क प्रभारी नामित किया गया है। वहीं पार्टी अध्यक्ष ने एडवोकेट वीरेंद्र को गाजियाबाद का महानगर अध्यक्ष बनाया है। इसी तरह नगर पालिका परिषद इटावा के लिए संचालन समिति का गठन किया गया है। जिसमें अध्यक्ष जिला पंचायत इटावा अंशुल यादव, पूर्व चेयरमैन पीसीएफ अंकुर यादव, पूर्व प्रत्याशी इटावा सर्वेश शाक्य, चेयरमैन नगर पालिका परिषद इटावा फुरकान अहमद, पूर्व प्राचार्य अजंट सिंह, विधायक भरथना राघवेंद्र गौतम, निवर्तमान जिलाध्यक्ष समाजवादी पार्टी गोपाल यादव, बृजमोहन राजपूत, चंदन पाल और इदरीश अंसारी को शामिल किया गया है।

योगी सहित कई नेताओं के ट्विटर अकाउंट से हटा ब्लू टिक

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। ट्विटर इंडिया ने वेरिफाइड अकाउंट के ब्लू टिक साइन को बृहस्पतिवार से पेड कर दिया है। ट्विटर की नई व्यवस्था लागू होते ही मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक बसपा सुप्रीमो मायावती, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी सहित सरकार के मंत्रियों, राजनीतिक दलों के नेताओं के ट्विटर अकाउंट से ब्लू टिक साइन हट गया।

सीएम, डिप्टी सीएम सहित नेताओं के ट्विटर अकाउंट से ब्लू टिक साइन हटते ही सोशल मीडिया पर हल्ला मच गया। भाजपा सोशल मीडिया प्रकोष्ठ के संयोजक अंकित सिंह चंदेल का कहना है कि वेरिफाइड अकाउंट पेड होने के कारण ब्लू टिक हटाये गए है। निर्धारित शुल्क अदा करने पर ब्लू टिक साइन फिर लग जायेगा। फिलहाल केवल केंद्रीय मंत्री, सांसद और ग्रे टिक वाले अकाउंट ही वेरिफाइड है।

गोप ने की महापौर प्रत्याशी वंदना मिश्रा के पक्ष में माहौल बनाने की अपील

» पूर्व मंत्री की अध्यक्षता में चुनाव संचालन समिति की बैठक सम्पन्न

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी की लखनऊ निकाय चुनाव सहित महापौर प्रत्याशी वंदना मिश्रा की चुनाव की तैयारियों को लेकर समाजवादी पार्टी के कैसरबाग स्थित नगर कार्यालय में चुनाव संचालन समिति की बैठक पूर्व मंत्री अरविंद सिंह गोप की अध्यक्षता में की गई।

बैठक में कहा समस्त फ्रंटल संगठन पूरी तैयारी के साथ निकाय चुनाव और महापौर प्रत्याशी वंदना मिश्रा के पक्ष में माहौल बनाने और बूथवार लोगो से घर-घर जाकर मतदाताओं से मिलें। बैठक में तय हुआ वोटर लिस्ट लेकर दो दो पन्ने की जिम्मेदारी लोगो को दी जाए। जिनका मुख्य कार्य जनसंपर्क के साथ साथ पोलिंग वाले दिन लोगो को घर से निकल कर मतदान कराना उनकी प्रमुख जिम्मेदारी होगी। लोगो को विधानसभा वार प्रभारी बनाकर चुनाव की जिम्मेदारी दी गयी। बैठक की अध्यक्षता पूर्व मंत्री अरविंद सिंह गोप ने की। बैठक में प्रमुख रूप से पूर्व मंत्री के अलावा सिद्दीकी, नगर अध्यक्ष सुशील दीक्षित और सिमरन सक्सेना, नेहा यादव,अमित सोनकर सहित सभी वार्ड के पार्षद प्रत्याशी मौजूद रहे।

प्रतियोगी परीक्षार्थियों से राहुल ने की देश के हालात पर चर्चा

» यूपीएससी और एसएससी उम्मीदवारों से किया संवाद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने नई दिल्ली के मुखर्जी नगर इलाके में संघ लोक सेवा आयोग और कर्मचारी चयन आयोग की परीक्षाओं की तैयारी कर रहे छात्रों से देश के हालात पर बातचीत की। मुखर्जी नगर में, राहुल को छात्रों के साथ सड़क किनारे एक कुर्सी पर बैठे देखा गया और उन्होंने उनसे उनकी उम्मीदों और अनुभवों के बारे में पूछा।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी आजकल दिल्ली के अलग अलग इलाकों में घूमते हुए नज़र आ जा रहे हैं, इसी कड़ी में दिल्ली के शिक्षा का गढ़ माने जाने वाले इलाके मुखर्जी नगर में देश के अलग अलग हिस्सों से आये स्टूडेंट्स से मुखातिब हुए, इस मौके पर छात्रों का उत्साह देखने लायक था। इससे पहले, इस सप्ताह की शुरुआत में, गांधी ने पुरानी दिल्ली में जामा मस्जिद क्षेत्र और बंगाली बाजार का दौरा किया और इन क्षेत्रों के लोकप्रिय व्यंजनों का लुत्फ उठाया। गांधी ने जामा मस्जिद क्षेत्र और अन्य भोजनालयों में एक प्रसिद्ध शरबत विक्रेता से मुलाकात की। उन्होंने खुद को फल भी खिलाए और बंगाली मार्केट में गोलगप्पों का स्वाद चखा।

दिल्ली में आप व भाजपा में फिर रार

» प्राइवेट कंपनी से बिजली सब्सिडी को ऑडिट कराने पर हंगामा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। शराब घोटाले में बुरी तरह उलझी दिल्ली सरकार की बिजली सब्सिडी के मोर्चे पर भी मुश्किलें बढ़ सकती हैं। अरविंद केजरीवाल सरकार ने एक निजी कंपनी के जरिए दिल्ली की बिजली कंपनियों का ऑडिट कराने का फैसला लिया है।

लेकिन भाजपा ने आरोप लगाया है कि यह भ्रष्टाचार को छिपाने की कोशिश है क्योंकि इस ऑडिट फर्म को सरकार के जरिए ही भुगतान किया जाएगा, इसलिए इस मामले का सच बाहर नहीं आएगा। पार्टी ने बिजली सब्सिडी का मामला सीएजी से कराने की मांग की है। दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि दिल्ली सरकार के द्वारा पावर डिस्कॉम को दी गई पावर सब्सिडी का निजी कंपनी से ऑडिट कराने का फैसला बहुत बड़ा छलावा है। उन्होंने कहा कि अब तक केजरीवाल सरकार बिना किसी ऑडिट मैकेनिज्म के पावर डिस्कॉम्स को बिजली सब्सिडी के पैसे देती रही है। इस पॉवर डिस्कॉम में दिल्ली सरकार और निजी कंपनियां बराबर की भागीदार हैं। भाजपा नेता का आरोप है कि डिस्कॉम बोर्ड में आम आदमी पार्टी नेताओं की नियुक्ति की जाती रही है। ऐसे में यह माना जा सकता है कि सब्सिडी के रूप में किया गया भुगतान दूसरे रूट से आम आदमी पार्टी के पास वापस आ जाता है। भाजपा ने शराब घोटाले का हवाला देते हुए कहा कि उसी मॉडल के सहारे बिजली सब्सिडी की रकम को भी भ्रष्ट रास्तों से पार्टी तक पहुंचाया गया है।

सिसोदिया शराब घोटाले के मुख्य साजिशकर्ता : सीबीआई

नई दिल्ली। सीबीआई ने हाईकोर्ट में कहा कि दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया शराब घोटाले के मुख्य साजिशकर्ता है। जांच एजेंसी ने कहा कि आप नेताओं के बयान सिसोदिया की रक्षा (बचाव) करने का प्रयास है। केंद्रीय जांच ब्यूरो ने सिसोदिया की जमानत याचिका का विरोध जताते हुए यह तर्क रखा। सीबीआई ने कहा है कि इस मामले में एक गहरी जड़ और बहुस्तरीय साजिश शामिल है। सिसोदिया जांच के दौरान टालमटोल करते रहे हैं। सीबीआई ने कहा कि सिसोदिया को कार्यपालिका और नौकरशाहों के साथ घनिष्ठ साठगांठ का पता चलता है। सीबीआई ने कहा है कि उच्च पद पर आसीन पार्टी के सहयोगी तथ्यात्मक रूप से गलत दावे करना जारी रखते है। वे लोग यह साबित करने में लगे है कि सिसोदिया एक राजनीतिक प्रतिशोध का शिकार हैं और जांच को प्रभावित करने के लिए हैं।

कर्नाटक में इस बार भाषा नहीं है मुद्दा

अन्य दक्षिणी राज्यों में हिंदी विरोध तेज

» 26 में होगा परिसीमन घटेंगे सांसद

» भाजपा व कांग्रेस भी नहीं मानती मुद्दा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कर्नाटक। कर्नाटक विधानसभा चुनाव में बस अब 15-20 दिन रह गए हैं। दूध, भ्रष्टाचार, आरक्षण से लेकर सब मुद्दे उठाए जा रहे हैं। पर एक मुद्दा गायब है वो है हिंदी भाषा के विरोध का मुद्दा। चुनाव प्रचार में अक्सर दक्षिण भारतीय राज्यों के चुनावों में इसकी चर्चा होती है। पिछले ही साल केंद्रीय विश्वविद्यालयों और तकनीकी संस्थानों में अंग्रेजी के बजाय हिंदी के इस्तेमाल की संसदीय समिति की सिफारिश के बाद पूरे दक्षिण भारत में विरोध के स्वर उठने लगे थे। इसके बाद अमूल दही के पैकेट पर हिंदी में लिखा 'दही' भी विरोध का की एक वजह बना।

विरोध को शांत करने के लिए ही कर्नाटक की भाजपा सरकार आनन-फानन कन्नड़ लैंग्वेज कॉम्प्रिहेंसिव बिल भी पारित कर दिया। अब भाजपा नेता इस मुद्दे पर पूरी तरह खामोश हैं, हिंदी का विरोध खुलकर यहां चुनावी मुद्दा नहीं बन पाया है और राष्ट्रीय मीडिया में भी इसे चुनावी मुद्दा नहीं माना जाता। मगर विशेषज्ञ मानते हैं कि उत्तर और दक्षिण के टकराव का ये मुद्दा अभी भले ही राष्ट्रीय स्तर पर किसी को बढ़ता न दिखे 2026 में ये विस्फोटक रूप ले सकता है। 2026 में लोकसभा सीटों का परिसीमन होना है। दक्षिण भारतीय राज्यों को आशंका है कि आबादी के हिसाब से सीटें तय होने की वजह से संसद में उनका प्रतिनिधित्व घटना तय है। उनकी शिकायत ये है कि डेमोग्राफिक से लेकर इंडस्ट्रियल तक विकास के हर पैमाने पर बेहतर स्थिति में होने के बावजूद नहीं बल्कि बेहतर होने की वजह से उनका प्रतिनिधित्व घटा दिया जाएगा और ये किसी को मंजूर नहीं। जानिए, क्यों दक्षिण भारत को है हिंदी से शिकायत और क्या वाकई में नॉर्थ इंडिया से बेहतर होने की वजह से उन्हें नुकसान होने वाला है।

हिंदी भाषी राज्य मतलब नॉर्थ इंडिया

नॉर्थ इंडिया यानी उत्तर भारत की जियोग्राफिकल परिभाषा और पब्लिक परसेप्शन में खासा अंतर दिखता है।भौगोलिक परिस्थितियों के हिसाब से लद्दाख से लेकर मध्य भारत में झारखंड तक का पूरा इलाका नॉर्थ इंडिया में आता है। लेकिन आम धारणा यही है कि हिंदी भाषी राज्यों को उत्तर भारत में गिना जाता है। इनमें उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, दिल्ली, उत्तराखंड और हरियाणा शामिल हैं। राजस्थान का काफी इलाका भारत की पश्चिमी सीमा का बड़ा हिस्सा बनाता है, मगर फिर भी आम धारणा में इसे पश्चिमी राज्य के बजाय उत्तर भारत में गिना जाता है। पंजाब, हिमाचल और जम्मू-कश्मीर भाषाई अंतर के कारण उत्तर भारत में तो अलग देखे जाते हैं, लेकिन दक्षिण भारतीय राज्यों के जनमानस में ये भी उत्तर भारत का ही हिस्सा है।

हिंदी का विरोध खुलकर यहां चुनावी मुद्दा नहीं बन पाया है और राष्ट्रीय मीडिया में भी इसे चुनावी मुद्दा नहीं माना जाता।

कर्नाटक में 2017-18 में हिंदी के विरोध में आंदोलन भड़का था।

भारत के नक्शे पर प्रायद्वीपीय इलाका है दक्षिण भारत

भारत के नक्शे पर प्रायद्वीपीय इलाका यानी अरब सागर, हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी से घिरे भारतीय भूभाग को साउथ इंडिया यानी दक्षिण भारत माना जाता है। इसमें आज 5 राज्य आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल शामिल हैं। ब्रिटिश इंडिया में इन्हीं राज्यों और ओडिशा के कुछ हिस्से को मिलाकर ही मद्रास प्रेसिडेंसी बनाई गई थी। भाषाई आधार पर देखा जाए तो भारत की 6 क्लासिकल भाषाओं में से 4 यानी तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम इन्हीं राज्यों में बोली जाती हैं। इसके अलावा दो क्लासिकल भाषाएं संस्कृत और उड़िया हैं।

46 प्रतिशत से ज्यादा लोग बोलते हैं हिन्दी

आजादी के बाद भाषा के नाम पर दूरी और जब भारतीय संविधान बन रहा था, उस समय एक बड़ा समूह चाहता था कि हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया जाए। मगर उस समय भारत में कुल 1652 भाषाएं बोली और लिखी जा रही थीं। 91प्रतिशत जनसंख्या को 14 से 18 भाषाओं (आज बढ़कर 22 भाषाएं हो गई हैं) में विभाजित किया जा सकता था। लिहाजा ये भाषाएं संविधान के 8वें शेड्यूल में संलग्न कर दी गईं। उर्दू और हिंदुस्तानी को हिंदी से जोड़ देने के बाद पता चला कि देश के 46 प्रतिशत लोग इस एक भाषा शैली का इस्तेमाल करते थे। इसे आधार बनाते हुए हिंदी को देश की आधिकारिक भाषा बनाया गया। लेकिन इसका विरोध न हो इसके लिए अंग्रेजी को भी विकल्प के तौर पर रखा गया। उस वक्त ये तय किया गया था कि अंग्रेजी को विकल्प के तौर पर 15 साल तक ही रखा जाएगा। राज्यों को मिला था अपनी आधिकारिक भाषा चुनने का अधिकार संविधान निर्माण के समय राज्यों को भी स्वतंत्रता दी गई की वे अपने राजकाज के लिए अपनी भाषा चुन लें। संविधान के अनुसार संसद को छूट थी कि भाषा आयोग बनाए जो ये तय करे कि 15 साल के बाद आधिकारिक भाषा क्या होगी और अंग्रेजी उपयोग में रहेगी या नहीं।

मेट्रो में हिंदी साइनबोर्ड्स पर लोग भड़के

कर्नाटक में भले हिंदी मुद्दा न हो बाकी दक्षिण भारतीय राज्यों में मामला गरम कर्नाटक में 2017-18 में हिंदी के विरोध में आंदोलन भड़का था। मुद्दा था बेंगलुरू मेट्रो में हिंदी साइनबोर्ड्स के इस्तेमाल का। समय-समय पर वहां विरोध तेज होता रहा है, लेकिन चुनाव के दौरान भाजपा इस मुद्दे को गरम नहीं होने देना चाहती। कन्नड़ लैंग्वेज कॉम्प्रिहेंसिव डेवलपमेंट बिल के जरिये जहां राज्य सरकार कन्नड़ सेंटीमेंट को शांत करना चाहती है, वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दिल्ली में कन्नड़ फेस्टिवल में दो घंटे बिताने को भी इसी से जोड़कर देखा जा रहा है। हालांकि कर्नाटक के अलावा बाकी राज्यों में संसदीय समिति की हालिया सिफारिशों का काफी विरोध हो रहा है। इस विरोध में सबसे आगे तमिलनाडु है। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने पिछले साल 16 अक्टूबर को केंद्र को लिखे पत्र में अपनी आपत्ति दर्ज की थी। स्टालिन ने हाल ही में सीआरपीएफ भर्तियों में हिंदी कॉम्प्रिहेन्शन के अनिवार्य पेपर के विरोध में भी पीएम नरेंद्र मोदी को पत्र लिखा है। उनका कहना है कि तमिल अभ्यर्थियों से हिंदी कॉम्प्रिहेन्शन की उम्मीद करना गलत है।

भाषा आयोग की सलाह पर निणर्य

1955 में बना था आधिकारिक भाषा आयोग ने सलाह दी- अभी कोई एक भाषा चुनने के लिए सही समय नहीं 1955 में आधिकारिक भाषा कमीशन का गठन हुआ और बी.जी. खेर की अध्यक्षता में कमीशन ने एक साल बाद रिपोर्ट संसद में पेश की। इसका परीक्षण कर संयुक्त संसदीय समिति ने अपनी सलाह में कहा कि केंद्र के लिए एक आधिकारिक भाषा की आवश्यकता तो है लेकिन इसके लिए कोई तारीख तय करना उचित नहीं होगा। उस वक्त तक इंतजार करना चाहिए जब तक एक भाषा बिना किसी दिक्कत के आसानी से इस्तेमाल की जा सके। 1987 में संविधान संशोधन के जरिये अंग्रेजी जारी रखना तय हुआ। मगर संसदीय समिति का पेंच नहीं हटा 1987 में संविधान में 58वें संशोधन से ये तय किया गया कि संसद और केंद्र सरकार के कामकाज में अंग्रेजी का इस्तेमाल हिंदी के साथ जारी रहेगा। हर विधेयक को अंग्रेजी के साथ हिंदी में भी उपलब्ध किया जाएगा। जो राज्य हिंदी में काम नहीं करते उनके क्रियाकलापों को हिंदी और अंग्रेजी में भी अनुवाद के रूप में उपलब्ध किया जाएगा। ऐसे राज्यों और केंद्र के बीच संवाद की भाषा अंग्रेजी बनी रहेगी। लेकिन इसके साथ ही केंद्र को संवेदनशील तरीके से हिंदी के प्रचार प्रसार की जिम्मेदारी निभाते रहनी होगी। दरअसल, ऑफिशियल लैंग्वेज एक्ट के तहत 1976 में ही एक संसदीय समिति का गठन किया जा चुका था। इसका काम आधिकारिक भाषा के इस्तेमाल पर रिपोर्ट देना है। समिति में 30 सदस्य होते हैं जिनमें से 20 लोकसभा और 10 राज्यसभा से आते हैं। यह समिति हर 5 वर्ष में एक रिपोर्ट देती रही है जबकि अब केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के नेतृत्व में मौजूदा समिति 3 साल में ही दो रिपोर्ट प्रस्तुत कर चुकी है।

2026 के लोकसभा परिसीमन का मुद्दा गरमाएगा

मगर इस विरोध की असली वजह कुछ और 2026 में हो सकता है विस्फोट स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी से पढ़े डेटा वैज्ञानिक नीलकंतन आर.एस. भारत के भाषा समेत सामाजिक और आर्थिक मुद्दों की बारीकियों का डेटा अनालिसिस के माध्यम से अध्ययन करते हैं। सितंबर, 2022 में ही उनकी किताब 'साउथ वर्सेज नॉर्थ-इंडियाज ग्रेट डिवाइड' इसी विषय को खंगालती है। भास्कर से बातचीत में नीलकंतन कहते हैं कि अभी राजनीतिक विरोध भले ही हिंदी पर फोकस्ड दिखता हो, मगर ये मुद्दा सिर्फ भाषा का नहीं है। वो बताते हैं कि दक्षिण के राज्य और राजनीतिक दल इस बात से ज्यादा चिंतित हैं कि 2026 के लोकसभा परिसीमन का नतीजा क्या होगा। लोकसभा सीटों का आबादी के आधार पर आखिरी बार परिसीमन 1976 में हुआ था। अब 2026 में दोबारा ये प्रक्रिया शुरू होगी। मौजूदा परिस्थिति में ही दक्षिण भारत से कुल 129 सांसद चुनकर दिल्ली जाते हैं। जबकि केवल क्र बिहार और झारखंड से ही 134 सांसद संसद में बैठते हैं। इतने सालों में हिंदी बेल्ट में आबादी बढ़ी है, जबकि दक्षिण भारतीय राज्यों में बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं और जागरूकता की वजह से हेल्थ इंडिकेटर्स ही नहीं सुधरे हैं, आबादी भी नियंत्रित हो गई है। अब आबादी के आधार पर परिसीमन होता है तो दक्षिण भारतीय राज्यों में लोकसभा सीटें घट जाएंगी और हिंदी बेल्ट के सांसद और बढ़ जाएंगे। यानी हेल्थ, इंडस्ट्री और रोजगार के आंकड़े सुधारने के बावजूद दक्षिण के राज्यों का प्रतिनिधित्व कम हो जाएगा।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

जिद... सच की

डेटा और इन्फॉर्मेशन के प्रोसेस में आएगी तेजी

> उन्नीसवीं सदी में क्वांटम फीजिक्स का जन्म हुआ था। इसी की वजह से यह जानना मुमकिन हो पाया कि प्रकाश एनर्जी-फोटान के बहुत ही सूक्ष्म, अविभाज्य यूनिट्स या क्वांटा से बना होता है। कंवाटम कंप्यूटर के जरिए गणना से जुड़े काम बहुत ही कम समय में किए जा सकते हैं। ये कंप्यूटर पारंपरिक कंप्यूटरों के मुकाबले बेहद शक्तिशाली होते हैं।

भारत में भी अब क्वांटम तकनीकि से कम समय में डेटा और इन्फॉर्मेशन को प्रोसेस किया जा सकता है। सरकार ने नेशनल क्वांटम मिशन को मंजूरी दे दी है। इस मिशन पर अगले 8 वर्षों में करीब 6 हजार करोड़ रुपये खर्च होंगे। इस मिशन के साथ ही भारत दुनिया के उन चुनिंदा टॉप 7 देशों में शुमार हो गया है जो क्वांटम टेक्नॉलजी के क्षेत्र में रिसर्च और डिवेलपमेंट कर रहे हैं। इसके जरिए भारत सामान्य कंप्यूटरों के कई गुना पावरफुल और बहुत ही सुरक्षित ढंग से जटिल समस्याओं को हल करने वाले कंप्यूटर तैयार किए जाएंगे। ये टेक्नॉलजी क्वांटम थिअरी के सिद्धांत पर आधारित है जो सबअटॉमिक स्तर पर ऊर्जा और पदार्थ की व्याख्या करती है। इसके इस्तेमाल के जरिए बेहद कम समय में डेटा और इन्फॉर्मेशन को प्रोसेस किया जा सकता है। उन्नीसवीं सदी में क्वांटम फीजिक्स का जन्म हुआ था। इसी की वजह से यह जानना मुमकिन हो पाया कि प्रकाश एनर्जी-फोटान के बहुत ही सूक्ष्म, अविभाज्य यूनिट्स या क्वांटा से बना होता है। कंवाटम कंप्यूटर के जरिए गणना से जुड़े काम बहुत ही कम समय में किए जा सकते हैं। ये कंप्यूटर पारंपरिक कंप्यूटरों के मुकाबले बेहद शक्तिशाली होते हैं।

क्वांटम मिशन के तहत सूचनाओं की प्रोसेसिंग न सिर्फ तेज होगी बल्कि कहीं ज्यादा विश्वसनीय होंगी। इसके तहत भारत अगले 8 सालों में 50 से 1000 क्यूबिट्स की मीडियम रेंज क्षमता वाले क्वांटम कंप्यूटर विकसित करने का लक्ष्य रखा है। 50 फीजिकल क्यूबिट वाले कंप्यूटरों को अगले 3 सालों में बनाया जाएगा। 50 से 100 फीजिकल क्यूबिट वाले कंप्यूटर अगले 5 साल और 1000 फीजिकल क्यूबिट वाले कंप्यूटरों को अगले 8 साल में तैयार करने की योजना है। नैशनल क्वांटम मिशन के तहत शुरुआती 3 साल में भारत के भीतर 3000 किलोमीटर की सीमा में ग्राउंड स्टेशनों और रिसिवर के बीच सैटलाइट बेस्ड सुरक्षित क्वांटम कम्यूनिकेशन सिस्टम तैयार किया जाएगा। 2000 किलोमीटर से ज्यादा दूरी वाले भारतीय शहरों के बीच क्वांटम की डिस्ट्रिब्यूशन का इस्तेमाल करते हुए कम्यूनिकेशन लाइन बनेगी। ज्यादा दूरियों खाकर दूसरे देशों के साथ क्वांटम कम्यूनिकेशन के लिए आने वाले सालों में टेस्ट किए जाएंगे। संचार और मौसम विज्ञान के क्षेत्र में क्वांटम टेक्नॉलजी का क्रांतिकारी असर दिखेगा। इससे न सिर्फ कम्यूनिकेशन सिस्टम तेज होगा बल्कि काफी सुरक्षित होगा। इससे ऐयरो-स्पेस इंजीनियरिंग, वेदर प्रेडिक्शन, कम्यूनिकेशन, फाइनैंशियल ट्रांजैक्शन, साइबर सिक्यॉरिटी, हेल्थ, एजुकेशन, एग्रीकल्चर जैसे सेक्टर की सूरत बदल सकती है। इससे नेक्स्ट जेनरेशन टेक्नॉलजी सामने आएंगी।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

सूडान संकट से घिरे भारतीयों की फिक्र

पुष्परंजन

कन्नडा में हक्की का अर्थ होता है, 'पक्षी'। 'पिक्की' का मतलब है, 'पकड़ना'। हक्की-पिक्की जनजाति के लोग पशु-पक्षियों को पकड़ने, जड़ी-बूटियों, मसालों को बेचने के कामों में लगे रहते हैं। ये खुद को महाराणा प्रताप के वंशज मानते हैं। वे कहते हैं, 'जब मुगलों का सितम हुआ, तो हमारे पूर्वज दक्षिण की तरफ कूच कर गये।' 23 अन्य उपनामों के अलावा 'बागरी' भी बोलते हैं स्वयं को, जो राजस्थान, हरियाणा, पंजाब में राजपूत-जाटों से जुड़ी घुमक्क प्रजाति है। पुडुचेरी और दक्षिण के चार सूबों में इनकी संख्या 29 हजार है। हक्की-पिक्की सबसे अधिक कर्नाटक में बसे, वहां उनकी आबादी 14 हजार के आसपास है। योशुवा प्रोजेक्ट वाले बताते हैं कि विदेश में हक्की-पिक्की की संख्या 30 हजार के करीब है। ये सूडान जड़ी-बूटियों व मसाले के कारोबार की वजह से जाने जाते रहे हैं। चूंकि कर्नाटक में चुनाव है, तो हक्की-पिक्की की चिंता ज्यादा हो चली है।

गुजरात में चुनाव होता, तो शायद सूडान के गृहयुद्ध में फंसे गुजरातियों की चिंता अधिक होती। लवचंद अमरचंद शाह पहले गुजराती थे, जो 1860 में व्यापार करने सूडान आये, और यहीं के होकर रह गये। उनकी देखा-देखी सबसे अधिक गुजराती ही इस उत्तर-पूर्वी अफ्रीकी देश में आये। लाल सागर के तट पर बसे सूडान के इर्दगिर्द मिस्र, इरीट्रिया, इथियोपिया, दक्षिणी सूडान, सेंट्रल अफ्रीकन रिपब्लिक, चाड और लिबिया जैसे सात देश हैं। भारतीय मूल के कोई चार हजार लोग इस मुल्क में आबोदाना-आशियाना की वजह से हैं।

सूडान में इस समय गृहयुद्ध जैसी स्थिति है। सूडान पर राज कर रहे उमर अल-बशीर को सत्ता से हटाने के बाद 2021 में अंतरिम सरकार अस्तित्व में आई थी। तब सार्वभौम परिषद बनी, सेना व पैरामिल्ट्री फोर्स के लोग सत्ता चलाने लगे। आर्मी चीफ जनरल अब्देल फतह अल-बुरहान देश के राष्ट्रपति और रैपिड सपोर्ट फोर्स (आरएसएफ) के लीडर जनरल मोहम्मद हमदान डगलो उपराष्ट्रपति बन गए। दिसंबर, 2022 के बाद से 'आरएसएफ' सत्ता पर पूर्ण नियंत्रण के प्रयास में है। 'आरएसएफ' का गठन 2013 में हुआ था। विश्लेषक, कुख्यात विद्रोही संगठन 'जंजावीद' को 'आरएसएफ' की बुनियाद मानते हैं। सेना के समानांतर 'आरएसएफ' जैसे मजबूत सुरक्षा बल का होना, सूडान की अस्थिरता की वजह माना जाता रहा है। सेना प्रमुख जनरल बुरहान ने कहा

है कि सेना किसी निर्वाचित सरकार को ही सत्ता का पूर्ण हस्तांतरण करेगी। दोनों पक्षों में घमासान जारी है। बुधवार शाम तक 300 से अधिक लोगों के मारे जाने की खबर है। सूडान में शांति कब आएगी, कहना कठिन है। मगर, कर्नाटक के 31 हक्की-पिक्की आदिवासियों का फंस जाना कन्नाडिगा अस्मिता और उनकी सुरक्षा का सवाल बन गया है। ये सभी हक्की-पिक्की जनजाति के लोग सूडानी शहर अल-फशेर में आयुर्वेदिक जड़ी-बूटी बेचने के लिए गए थे। इनमें से 19 लोग कर्नाटक के हुनसूर, 7 शिवामोगा, और 5 लोग चन्नागिरी के रहने वाले हैं। इन 31 वनवासियों में महिलाओं की संख्या सर्वाधिक है। प्रकाश से भी तेज गति से चल रही सूचनाओं के इस कालखंड में देश के विदेशमंत्री यह बयान दे रहे हैं कि सुरक्षा कारणों से हम उनके लोकेशंस नहीं बता सकते। इससे उलट, विभिन्न संचार माध्यमों के जरिये वहां फंसे भारतीय खुद अपना ठिकाना भेजकर मदद की गुहार लगा रहे हैं। सूडान में फंसे भारतीयों में से एक, एस. प्रभु ने मंगलवार को दिल्ली से प्रकाशित अंग्रेजी अखबार के पत्रकार से फोन पर बात की थी। उसने बताया था कि हम पिछले 4-5 दिनों से किराए के मकान में फंसे हुए हैं। हमारे पास खाना खत्म हो चुका, पीने के लिए पानी तक नहीं है। यों, भारतीय दूतावास किस तरह की मदद कर रहा है, इसकी जानकारी लेने का हक सभी देशवासियों को है। खार्तुम स्थित भारतीय दूतावास ने मंगलवार को ट्वीट के जरिये एडवाइजरी जारी की, कि जो इंडियन जहां हैं, अपने घरों के अंदर ही रहें। जो राशन-पानी है, कुछ दिन उसी से काम चलायें। पड़ोसियों की मदद लें। भारतीय दूतावास ने एक कंट्रोल रूम बना रखा है, उससे नई दिल्ली को समय-समय पर अपडेट किया जा रहा है।

लेकिन क्या, यह सब काफी है? न्यूयार्क टाइम्स की रिपोर्ट है कि पचास लाख की आबादी वाला खार्तुम भोजन-पानी व बिजली के बगैर बेहाल है। यूएन की संस्थाओं ने चारेक दिन पहले राशन पहुंचाने से हाथ खड़े कर दिये थे। भारतीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर, कन्नाडिगा नागरिकों की सुरक्षा पर सवाल उठाने वाले कांग्रेस नेता सिद्धारमैया पर भड़के हुए हैं। उन्होंने ट्वीट कर कहा, 'सूडान में फंसे भारतीयों की स्थिति पर राजनीति करना बहुत ही गैर-जिम्मेदाराना है। मुझे नहीं लगता कि आपको इस तरह के बयान देकर किसी तरह का राजनीतिक फायदा होगा।'

काले-गोरे की ग्रंथि से मुक्त होने का वक्त

विज्ञापनों में गोरे रंग के महिमामंडल के मुद्दे को जब समाज के प्रगतिशील लोगों ने उठाया तो आधुनिकता के इस दौर में बदलाव सिर्फ इतना हुआ है कि विज्ञापनों में गोरे रंग की जगह 'चमक' शब्द ने ले ली है। आज भी जब किसी लड़की की शादी होने वाली होती है, तो 6 महीने पहले से ही गोरेपन के लिए ट्रीटमेंट शुरू कर दिए जाते हैं।

सोनम लववंशी

हर समाज में भेदभाव का कोई-न-कोई रूप अस्तित्व में होता ही है। हमारा देश और समाज भी रंगभेद से अछूता नहीं है। हमारे यहां रंगभेद इस मायने में अलग है कि विदेशों में काले रंग का भेदभाव स्त्री और पुरुष दोनों के साथ समान रूप से होता है। परंतु, हमारे यहां काले या सांवलेपन को खासतौर से स्त्रियों के संदर्भ में देखा जाता है। प्रसिद्ध लेखिका मन्नू भंडारी और लेखिका व उद्योगपति प्रभा खेतान की आत्मकथाओं से पता चलता है कि किस प्रकार सांवले रंग ने उनके बचपन में जहर घोला, जिसका असर उनके पूरे व्यक्तित्व पर जिंदगी भर रहा। मध्य प्रदेश में शिवपुरी की एक महिला ने पिछले दिनों पुलिस में शिकायत दर्ज कराई कि उसके पति ने काली बेटी को जन्म देने के कारण घर से निकाल दिया। पति का आरोप है कि जब वह गोरा है, उसकी पत्नी गोरी तो फिर बच्चा कैसे काला हो सकता है। भला क्या बच्चे के रंग-रूप को कोई महिला कैसे निर्धारित कर सकती है। समाज में जब इस तरह की घटना होती है तो कई सवाल खड़े होते हैं। आधुनिकता के इस दौर में हमारी सोच का पैमाना कितना दकियानूसी है।

कहते हैं ईश्वर ने जब इंसान को बनाया तो उसमें कहीं कोई भेद नहीं किया। यह तो हम इंसान ही हैं जो रंग-रूप, ऊंच-नीच में बंटे हुए हैं। आधुनिकता के इस दौर में आज भी हमारे समाज की सोच नहीं बदली है। यहां मन की सुंदरता से कहीं ज्यादा बाहरी सुंदरता को महत्व दिया जाता है। लड़की कितनी भी पढ़ी-लिखी क्यों न हो, उसे रंगभेद का शिकार होना ही पड़ता है। कहने को तो 'ब्लैक इज ब्यूटी' कहा जाता है। पर, क्या हकीकत में हमारा समाज काले रंग को तवज्जो देता है। खासकर जब बात लड़कियों की हो, तो समाज से उन्हें सिर्फ ताने ही सुनने को मिलते हैं। इस बात से किसी को फर्क नहीं पड़ता कि लड़की संस्कारी है, पढ़ी-लिखी है, घर के सारे काम जानती है। लेकिन, फर्क पड़ता तो सिर्फ इस बात से कि लड़की का रंग कैसा है। कहीं वह सांवली तो नहीं है।

विज्ञापनों में गोरे रंग के महिमामंडल के मुद्दे को जब समाज के प्रगतिशील लोगों ने उठाया तो आधुनिकता के इस दौर में बदलाव सिर्फ इतना हुआ है कि विज्ञापनों में गोरे रंग की जगह 'चमक' शब्द ने ले ली है। आज भी जब किसी लड़की की शादी होने वाली होती है, तो 6 महीने पहले से ही गोरेपन के लिए ट्रीटमेंट शुरू कर दिए जाते हैं। उबटन लगाया जाता है ताकि लड़की सुन्दर दिखे। लड़की की आंतरिक सुंदरता का कोई मोल नहीं रहता। जबकि लड़कों के काले होने पर उन्हें कोई ताने नहीं मारे जाते। उनका कहीं कोई अपमान नहीं करता। हमारे देश में भगवान श्रीकृष्ण को पूजा जाता है। उनका श्याम वर्ण है। उनकी पूजा सारा देश करता है।

जो इस बात का प्रतीक है कि हमारे पूर्वज किसी भी तरह के रंग-भेद को मान्यता नहीं देते थे। यह विचारणीय प्रश्न है कि क्या भारत में शासक वर्ग के रूप में जब अंग्रेज आये तो क्या उन्होंने भारतीय समाज में गोरे रंग को विशिष्टता और प्रतिष्ठता से जोड़ दिया? धीरे-धीरे इस प्रवृत्ति ने समाज में एक ग्रंथि का रूप ले लिया। लेकिन विडंबना देखिए कि आज आजाद भारत में भी काले और गोरे में भेद किया जाता है। यही वजह है कि हमारे देश में काले रंग को लेकर लोगों में हीन भावना इतनी कूट-कूटकर भर दी गई है कि गोरेपन की क्रीम और फेयरनेस प्रोडक्ट्स में हम दुनिया में नम्बर एक पर हैं। सिनेमा समाज का आईना है। सिनेमा में भी गोरेपन को सुंदरता के प्रतीक के तौर पर दिखाया जाता है। खासकर हीरोइनों को गोरा ही दिखाया जाता है। यही वजह है कि जो हीरोइन सांवली है, उसने भी इंडस्ट्री में बने रहने के लिए ट्रीटमेंट का सहारा लिया, ताकि अपना सांवला रंग दुनिया से छिपा सके। सांवली लड़कियों में इस तरह की मानसिकता को भर दिया जाता है कि सिनेमा सिर्फ गोरे लोगों के लिए ही बना हुआ है। क्या खूबसूरती और काबिलियत का पैमाना सिर्फ गोरा होना ही है! विडंबना देखिए कि फिल्मी गाने में भी गोरे रंग का ही जिक्र किया जाता है। 'काला रंग है मेहनत का' यह लाइन सिर्फ फिल्मों में ही अच्छी लगती है। असल जिंदगी से इसका कोई नाता नहीं है। काले रंग के प्रति हीनता हमारे लोक-व्यवहार में भी साफ झलकती है।

हमारे समाज में महिलाएं पितृसत्तात्मक राजनीति का शिकार होती आई हैं। खासकर जब बात उनकी शारीरिक सुंदरता की हो। ये पितृसत्ता ही है जिसने सबसे पहले गुणों के आधार पर रंग की बात की। महिलाओं को आज भी हमारे समाज में उनके रंग-रूप के आधार पर ही तवज्जो दी जाती है। काली लड़कियां घर से लेकर ससुराल तक ताने का शिकार होती हैं। वैसे भी हमारे समाज की विडंबना है कि हम 21वीं सदी में भी रंगभेद की मानसिकता से ग्रस्त हैं। आज समाज में धीरे ही सही बदलाव आ रहा है। आर्थिक रूप से सबल स्त्रियां समाज में कामयाबी की नई इबारत लिख रही हैं। उनकी आर्थिक आजादी ने रंग-भेद की इबारत मिटानी शुरू कर दी है।

अस्थमा रोगियों के लिए वरदान हैं ये योगासन

श्वसन संबंधित बीमारियों जैसे अस्थमा एक गंभीर और क्रोनिक बीमारी है। अस्थमा के रोगियों को सांस फूलना, दम घुटने और सांस लेने में तकलीफ होने की समस्या हो सकती है। अस्थमा से बचाव के लिए कई तरह के उपाय की सलाह दी जाती है। अस्थमा की शिकायत होने पर वायु मार्ग संकीर्ण सूज जाते हैं, इस कारण अतिरिक्त बलगम बनता है, जिससे सांस लेने में दिक्कत होती है। सांस छोड़ते समय खांसी, सीटी की आवाज आ सकती है। वहीं अस्थमा के कारण कई गंभीर जटिलताएं हो सकती हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञ के मुताबिक, योग के माध्यम से अस्थमा के लक्षणों को नियंत्रित कर सकते हैं। यहां आपको कुछ योगासनों के बारे में बता रहे हैं, जो अस्थमा जैसी श्वसम संबंधित समस्याओं में सुधार लाने में सहायक हैं।

भुजंगासन

कई स्वास्थ्य संबंधी जटिलताओं को सुधारने के लिए भुजंगासन का अभ्यास लाभकारी है। अस्थमा के मरीजों के लिए भुजंगासन बेहद फायदेमंद योग है। इसके नियमित अभ्यास से अस्थमा की जटिलताओं को कम किया जा सकता है। भुजंगासन करने के लिए पेट के बल लेटकर हथेलियों को कंधों के नीचे रखते हुए सांस लें और शरीर के अगले हिस्से को ऊपर की ओर उठाएं। कुछ सेकेंड इसी स्थिति में रहने के बाद सामान्य अवस्था में आ जाएं।

सेतुबंधासन

इस योग के नियमित अभ्यास से अस्थमा के लक्षणों को कम किया जा सकता है और सांस लेने की क्षमता में भी सुधार लाया जा सकता है। साथ ही सेतुबंधासन कमर दर्द से राहत दिलाने में भी फायदेमंद है। इस आसन को करने के लिए पीठ के बल लेट जाएं। पैरों को कंधे की चौड़ाई से थोड़ा अलग करते हुए घुटनों को मोड़ कर हथेलियों को खोलें और हाथ को बिल्कुल सीधा जमीन पर सटा कर रखें। श्वांस लें और कमर के हिस्से को ऊपर उठाएं और कंधे और सिर को सपाट जमीन पर रखें।

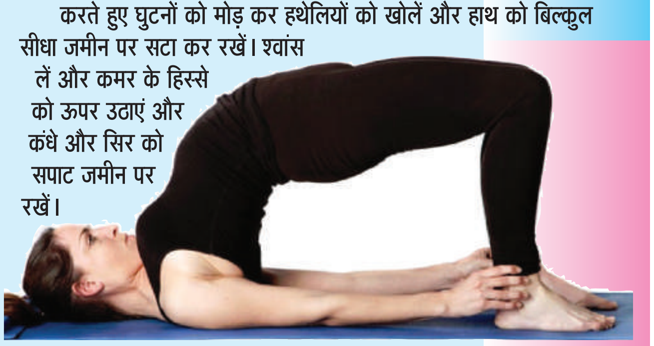

पवनमुक्तासन

श्वास संबंधी समस्याओं के इलाज के लिए पवनमुक्तासन का अभ्यास काफी लाभकारी है। पीठ के बल लेटकर दोनों पैरों को मिलाते हुए हथेली को जमीन पर लगाएं। फिर दाहिने पैर को घुटने से मोड़ते हुए छाती से लगा लें। दोनों हाथों की उंगलियों को मिलाकर घुटने से थोड़ा नीचे होल्ड करें।

पांच मिनट के योग से कम हो जाएगी पेट की चर्बी

नियमित योगासन का अभ्यास मस्तिष्क और शरीर को सेहतमंद रखता है। योगाभ्यास से कई शारीरिक और मानसिक लाभ मिलते हैं। वैसे तो अधिकतर लोग सुबह योगाभ्यास करते हैं या शाम को खाली वक्त में योग करते हैं। लेकिन अक्सर लोगों को यह चिंता रहती है कि खाने के बाद कहीं उनके पेट की चर्बी न बढ़ जाए। वजन बढ़ने के डर से लोग भोजन के पश्चात पैदल चलकर खाने को डाइजेस्ट करने की कोशिश करते हैं। पाचन सही से होने से पेट संबंधी समस्या नहीं होती और वजन भी नियंत्रित रहता है। लेकिन क्या आपको पता है कि भोजन करने के तुरंत बाद वज्रासन योगासन भी कर सकते हैं? योग विशेषज्ञ कहते हैं कि भोजन के तुरंत बाद 15 मिनट के लिए एक योग का अभ्यास पाचन तंत्र को सबसे प्रभावी तरीके से विनियमित करने में मदद करता है।

भोजन के तुरंत बाद करें वज्रासन

पाचन तंत्र सही रखने के लिए वज्रासन मुद्रा में बैठकर भोजन करना चाहिए। वज्रासन घुटने टेकने का आसन है। इसे डायमंड पोज भी कहते हैं। वज्रासन शरीर के मेटाबॉलिज्म को बढ़ाता है बल्कि पेट की चर्बी कम करने में भी मदद करता है।

हंसना मना है

इंजीनियरिंग के स्टूडेन्ट- सर, हमने कॉलेज में एक ऐसी चीज बनाई है, जिसकी सहायता से आप दीवार के आर-पार देख सकते हैं, सर (खुश होते हुए)- वाह ! क्या बात है क्या चीज है वह? स्टुडेन्ट- छेद। सर- दे थप्पड़- दे थप्पड़।

टीचर- एक तरफ पैसा, दुसरी तरफ अक्ल, क्या चुनोगे? विद्यार्थी- पैसा। टीचर- गलत, मै अक्कल चुनती, विद्यार्थी- आप सही कह रही हो मेडम,जिसके पास जिस चीज की कमी होती है वो वही चुनता है। दे थप्पड़ दे थप्पड़?

टीचर- टिल्लू तुम बताओ, बड़े होकर क्या बनोगे? टिल्लू, शरमाते हुए- दूल्हा, टीचर - अरे मेरा मतलब है, बड़े होकर क्या पाना चाहते हो? टिल्लू, शरमाते हुए- दुल्हन, टीचर - उफ्फोह, मुझे बताओ, बड़े होकर ऐसा क्या करोगे जो तुमने अभी तक नहीं किया? टिल्लू, शरमाते हुए- जी टीचर, शादी!

कहानी — बुद्धिमान राजा

सालों पहले एक नगर में एक बुद्धिमान राजा राज्य करता था। उनकी बुद्धि और होशियारी की चर्चा दूर-दूर तक थी। राजा कभी भी बिना सोचे-समझे कुछ नहीं कहता और न ही किसी आरोपी की बात सुने बिना उसे सजा सुनाता था। उसकी बुद्धिमत्ता के चर्चे सुनकर आसपास के राजा, रानियां और राजकुमारी आदि उनसे जलते थे। इसी जलन के चलते सभी उस राजा की बुद्धिमत्ता की परीक्षा लेने के लिए नए-नए तरीके अपनाते थे। हर बार राजा दूसरे राज्य के शासकों द्वारा ली गई परीक्षा में खरा उतर कर खुद को होशियार और योग्य राजा साबित करता था। एक दिन राजा की परीक्षा लेने के लिए एक राजकुमारी आई। उसके हाथों में दो फूलों की माला थी। दोनों माला में से एक असली फूल से बनी थी और दूसरी नकली से। उन दोनों मालाओं को देखकर उनका ये भेद बिल्कुल पता नहीं चल पाता था। इसी वजह से राजकुमारी ने राजा के सामने दोनों मालाएं रखकर पूछा, 'हे राजन! अगर आप बुद्धिमान हैं, तो बताइए कि इनमें से कौन-सी माला असली है। राजदरबार में बैठे सभी दरबारी माला को देखकर हैरान थे, क्योंकि किसी को समझ नहीं आ रहा था कि असली फूलों की माला कौन-सी है। सभी इस सोच में थे कि राजा कैसे बता पाएंगे कि असली फूलों की माला कौन-सी है। राजा भी माला को देखकर परेशान होने लगे। उसी वक्त उनके दिमाग में कुछ तरकीब आई। उन्होंने तुरंत अपने एक सेवक से कहा-बगीचे की खिड़कियों को खोल दो।' सेवक ने बगीचे की खिड़की को जैसे ही खोला, तो राजा ने देखा कि फूल में बैठी मधुमक्खियां खिड़कियों से राज दरबार में आ रही हैं। वो कुछ देर मधुमक्खियों को ही देखते रहे। जैसे ही एकात मधुमक्खी एक फूल की माला में बैठी, वैसे ही राजा ने कहा कि अब मैं बता सकता हूं कि असली माला कौन-सी है। राजा ने तुरंत उस माला की तरफ इशारा किया, जिसपर मधुमक्खी बैठ रखी थी। राजा की होशियारी देखकर दरबार में मौजूद सभी उनकी तारीफ करने लगे। सभी कहने लगे कि हर राज्य को आपके जैसे ही बुद्धमान राजा की जरूरत है। राजकुमारी भी राजा के बुद्धिमत्ता देखकर खुश हो गई। उसने भी बुद्धिमान राजा की तारीफ में कुछ शब्द कहे और वहां से अपने राज्य की ओर निकल पड़ी।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष — मेष राशि वाले ऋण के मामलों में परेशान रहेंगे। मेहनत का फल मिलेगा। मान-सम्मान में बढ़ोतरी होगी। व्यवसाय लाभदायक रहेगा। आपका व्यवहार न्यायानुकूल रहेगा।

वृषभ — आपके लिए आज का दिन थोड़ा कमजोर रहेगा। खर्चों में बढ़ोतरी होगी। मन अशांत रहेगा। किसी बात को लेकर आप किसी उधेड़बुन में लगे।

मिथुन — आज आपाके कार्यों में परिवार वालों का सहयोग प्राप्त होगा। आज नौकरीपेशा लोगों को वर्क फॉम होम मिलेगा, जिसे पूरा करने में आप सफल होंगे।

कर्क — आज आपका पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा। आज सामाजिक कार्यों में आपकी रूचि बढ़ेगी, जिससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। व्यापार में उतार-चढ़ाव रहेगा।

सिंह — आपके लिए आज का दिन सावधानीपूर्वक रहने का दिन है। आप अपने भाग्य पर ज्यादा भरोसा करेंगे, इसलिए कामों में शिथिलता आएगी।

कन्या — आज आपका दृष्टिकोण सकरात्मक रहेगा। वर्क फॉम होम कर रहे लोगों से अधिकारी वर्ग प्रसन्न होंगे। साथ ही आपके कार्यों की सराहना करेंगे।

तुला — आपकी कुंडली में धन प्राप्ति का योग बन रहा है। आपको संतान सुख की प्राप्ति होगी। गाय को रोटी खिलाएं, आपकी मेहनत रंग लायेगी। शुभ समाचार मिल सकता है।

वृश्चिक — आज का दिन आपके लिए अच्छा रहेगा। आप बाहुबल पर भरोसा रखेंगे और उससे आपके कामों में सफलता मिलेगी। दूसरों पर निर्भर रहना आपको परेशानी में डाल देगा।

धनु — आज अनुभवी लोगों की राय आपके लिए काफी लाभदायक होगा। आज आय के साधनों में बढ़ोतरी होगी। वैवाहिक जीवन में सुख-समृद्धि बनी रहेगी।

मकर — आज आपको अलर्ट रहने की आवश्यकता है। क्रोध पर संयम रखिएगा। आज कुछ मामलों में आप कन्फ्यूज रह सकते हैं। लापरवाही न करें। निवेश शुभ रहेगा।

कुम्भ — आज का दिन आपके लिए अच्छा रहेगा। आपका मन तो करेगा घर से बाहर जाने के लिए लेकिन ऐसे विचार को मन से निकाल देंगे तो ही अच्छा होगा।

मीन — आज जिस काम को करने की कोशिश करेंगे उस काम में आपको सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। स्वास्थ्य आज अच्छा बना रहेगा।

बॉलीवुड | मन की बात

अब भी लोग सिनेमा जाकर फिल्में देखना चाहते हैं : राधिका आप्टे

रअपने लीक से हटकर किरदारों के लिए चर्चा में रहने वाली एक्ट्रेस राधिका आप्टे की फिल्म मिसेज अंडरकवर सीधे ओटीटी पर रिलीज हो रही है। हमसे खास बातचीत में राधिका ने बताया कि उन्हें खुद को बड़े पर्दे पर देखना बहुत पसंद है, लेकिन ओटीटी के चलते उनकी फिल्में ज्यादा दर्शकों तक पहुंच रही हैं-इंडिया में लोग एंटरटेनमेंट के लिए बाहर जाकर फिल्म देखते हैं या फिर खाना खाने के लिए रेस्तरां जाते हैं। उनके मनोरंजन के लिए यही दो चीजे हैं। इसलिए मुझे लगता है कि सिनेमा में जाकर फिल्में देखना लोगों की जिंदगी का हिस्सा है। हालांकि पिछले कुछ अरसे में पूरे परिवार के साथ फिल्म देखना काफी महंगा हो गया है। मुझे लगता है कि अगर सिनेमा टिकटों के दामों में कमी हो, तो इसमें बहुत बदलाव आ सकता है। मेरा मानना है कि लोग अब भी सिनेमा में जाकर फिल्म देखना चाहते हैं। अगर टिकटों के दाम कम हो जाएं, तो हम ओटीटी व सिनेमा में बैलेंस ला सकते हैं। मुझे खुद को बड़ी स्क्रीन पर देखना बहुत पसंद आता है। यह एकदम अलग फीलिंग है। लेकिन ओटीटी का खुद का बड़ा अडवांटेज है कि उसे बहुत सारे लोग देख सकते हैं। इसलिए ओटीटी को ये बहुत बड़ा अडवांटेज है। फिल्म में कोई एक जॉनर नहीं होता है, उसमें कई कैटेगरी होती हैं। मसलन कॉमिडी, ड्रामा, थ्रिलर, तो मुझे समझ नहीं आता कि हम एक फिल्म का एक जॉनर में कैसे फिट करें। फिर इनका ट्रेंड भी आता जाता रहता है। नहीं मुझे ऐसा नहीं लगता।

अफवाह में सुमीत के गलत फैसले का विरोध करेंगी भूमि पेडनेकर

पिछले कुछ समय से फिल्मों को लेकर दर्शकों का नजरिया काफी बदला है। अब लोगों को ऐसा कुछ देखना चाहते हैं जिसमें उन्हें वास्तविकता दिखे। इसी बीच अब एक ऐसा ही धमाकेदार एक प्रोजेक्ट अफवाह के रूप में लेकर आ गए हैं सुधीर मिश्रा। भूमि पेडनेकर, नवाजुद्दीन सिद्दीकी और सुमीत व्यास के इर्द-गिर्द घूमती इस जबरदस्त राजनीतिक कहानी का ट्रेलर भी रिलीज कर दिया गया है। 2 मिनट 30 सेकंड के इस ट्रेलर में सुमीत व्यास एक राजनेता के रूप में नजर आ रहे हैं। वहीं, भूमि पेडनेकर उनकी ऐसी मंगेतर का किरदार निभा रही है, जो सुमीत के किसी भी गलत फैसले का डटकर सामना करती हैं। एक ओर सुमीत व्यास ऐसे राजनेता बने हैं, जो सत्ता हासिल करने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं।

ऐसे में इनकी जिंदगी में एंट्री होती है नवाजुद्दीन सिद्दीकी की। इसी के

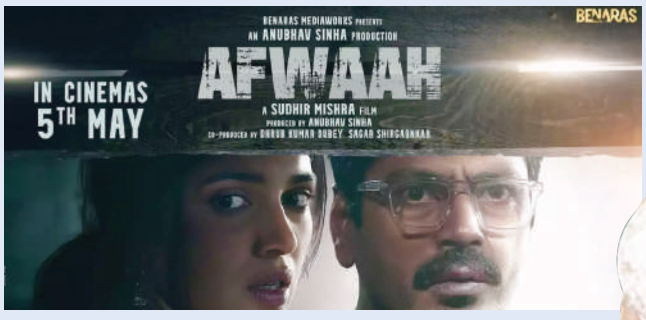

साथ यहां सोशल मीडिया का ऐसा इस्तेमाल दिखाया गया है, जिससे इन तीनों की जिंदगियां बदल जाती हैं।

ट्रेलर से ही अंदाजा लगाया जा रहा है कि अफवाह एक शानदार फिल्म साबित होने वाली है। इसमें नवाजुद्दीन सिद्दीकी, सुमीत व्यास और भूमि पेडनेकर ने एक बार फिर से साबित कर दिया है कि वह कोई भी किरदार निभा सकते हैं, लेकिन शूटर के रोल में दिख रहे शारिब हाशमी ने किरदार ने भी इस बार काफी एक्साइटमेंट बढ़ा दी है।

डायरेक्टर अनुभव सिन्हा के निर्देशन में बनी फिल्मों में अक्सर समाज का काला सच देखने को मिलता है, लेकिन इस बार उन्होंने सुधीर मिश्रा के निर्देशन में बनी अफवाह में निर्माता की कमान संभाली है। हालांकि, गंभीर मुद्दों को बहुत खूबसूरती के साथ पर्दे पर उतारने में खुद सुधीर मिश्रा भी माहिर हैं। इस बार वह

नहीं रहीं यश चोपड़ा की पत्नी पामेला चोपड़ा, 85 साल की उम्र में हुआ निधन

यश चोपड़ा की पत्?नी और आदित्य चोपड़ा की मां पामेला चोपड़ा का 85 साल की उम्र में निधन हो गया है। जानकारी के अनुसार उनका निधन गुरुवार सुबह मुंबई में हुआ है। पामेला अपनी पति यश चोपड़ा के प्रोडक्शन हाउस यश राज फिल्म्स में हमेशा ही काफी एक्टिव रहीं और कई फिल्मों में उन्हें लेखक और डिजाइन के तौर पर क्रेडिट भी दिया गया है।

बता दें कि निर्देशक यश चोपड़ा की 1976 में आई फिल्म 'कभी कभी' की कहानी पामेला ने ही लिखी थी। साथ ही अमिताभ बच्चन, रेखा और जया बच्चन स्टारर 1981 की फिल्?म 'सिलसिला' की डिजाइनर भी वही थीं। यश राज फिल्म्स को बढ़ाने में पामेला का बहुत बड़ा हाथ था। उन्हें इंडस्ट्री में प्यार से पैम आंटी के नाम से जाना जाता था। पामेला को हाल ही में नेटफ्लिक्स की सीरीज 'रोमांटिक्स' में देखा गया था।

यश चोपड़ा के बाद यश राज फिल्म्स के इस स्टूडियो को उनके बेटे आदित्य चोपड़ा आगे बढ़ा रहे हैं। पामेला इसमें उनका भी साथ दे रही थीं। नेटफ्लिक्स की इस सीरीज में पामेला अपने पति और परिवार, उनके वर्किंग स्टाइल और पर्सनल जिंदगी के बारे में काफी खुलकर बात करते हुए नजर आई थीं। रानी मुखर्जी, जो उनकी बहू हैं, ने हाल ही में एक इंटरव्यू में कहा था कि यश चोपड़ा की फिल्मों में जिस खूबसूरती से महिलाओं को दिखाया गया है, उसका जिम्मा पैम आंटी को ही जाता है। क्योंकि यश चोपड़ा को इसकी प्रेरणा उन्हें वहीं से मिलती थी।

अजब-गजब | इसे कुंवारी युवतियों के खून से नहाने का था शौक

दुनिया की सबसे क्रूर औरत!

दुनिया में कई ऐसे क्रूर पुरुष रहे हैं जिन्होंने हजारों लोगों को मौत के घाट उतार दिया है। इतिहास के बहुत से ऐसे राजा-महाराजा और सीरियल किलर रहे हैं जिन्हें लोगों को मारने में मजा आता था। पर क्या आपने कभी किसी महिला को ऐसी क्रूर हरकत करते देखा-सुना है? शायद नहीं, पर इतिहास के पन्नों में ऐसी महिलाओं का नाम दर्ज है जो अपनी क्रूरता के लिए कुख्यात थीं। आज हम दुनिया की सबसे क्रूर और खूंखार महिला के बारे में बताने जा रहे हैं जिसने अपने जीवनकाल में करीब 600 महिलाओं को मौत के घाट उतार दिया क्योंकि उसे किसी की जान लेने में मजा आता था।

हम आपको बताते हैं इतिहास की ऐसी महिलाओं के बारे में, जिन्होंने अपने सनकी रवैये से लोगों की जान ली और दुनिया को दिखाया कि क्रूरता क्या होती है। इसी सीरीज के तहत आज हम बात कर रहे हैं हंगरी की रहने वाली एक महिला एलिजाबेथ बैथोरी के बारे में।

नेशनल जियोग्राफिक की वेबसाइट के अनुसार एलिजाबेथ बैथोरी का जन्म 1560 में हुआ था। वो एक अमीर घराने में पैदा हुई थी, इस वजह से उसके घर में हमेशा से नौकर-चाकर उसकी सेवा के लिए थे। अधिक संपन्न होने की वजह से वो अपने से छोटे वर्ग के लोगों को अपना दास समझती थी और उन्हें प्रताड़ित करना उसे पसंद था। अगर कोई लड़की

उससे भी खूबसूरत, उसके सामने पड़ जाती तो वो उसकी जान ले लेती थी। 15 साल की उम्र में उसकी शादी फेरेंक नडास्डी से हो गई थी और उनके 4 बच्चे भी हुए। एलिजाबेथ को युवतियों की हत्या करने का शौक था। उसका मानना था कि उनके खून को शरीर पर लगाकर वो लंबे वक्त तक जवान दिखती रहेगी।

इस वजह से वो अपने पति के सामने ही कई बार लड़कियों को मार डालती थी और फिर उनके खून से नहाती थी। उसने अपने महल में नौकर रखे थे जो हत्याओं में उसकी मदद करते थे। 48 साल की उम्र में जब पति की हत्या हुई तो वो उत्तरी-पश्चिमी हंगरी के कैस्टल में शिफ्ट हो गई। उसे महिलाओं को टॉर्चर करना भी बहुत पसंद था। नौकर, गरीब वर्ग और यहां तक कि अपने दर्जे से निचले दर्जे के परिवारों की लड़कियों को भी उसने लोभ देकर महल में बुलाया और उनकी हत्या कर दी। साल 1610 में हंगरी के राजा मैथियस द्वितीय को इन हत्याओं पर शक हुआ और उन्होंने एलिजाबेथ के खिलाफ जांच के आदेश दिए। तब जाकर पता चला कि उनके महल में करीब 80 युवतियों को मौत के घाट उतारा गया है। पर जो चश्मदीद थे, उनका कहना था कि महिला ने 600 से ज्यादा महिलाओं को महल में रहते हुए मार डाला था। एलिजाबेथ के नौकरों को तो मौत की सजा हुई थी, पर अमीर और उच्च दर्जे की होने की वजह से उसे सिर्फ एक कमरे में जीवन भर बंद रहने की सजा मिली थी। उसी कमरे में रहते हुए, 1614 में, 54 साल की एलिजाबेथ की मौत हो गई थी। तब से वो इतिहास के पन्नों में सबसे खतरनाक महिला सीरियल किलर के तौर पर भी कुख्यात हो गई थी।

यहां 900 रुपये किलो बिक रहा परवल यकीन नहीं हो रहा तो यह पोस्ट देख लें

महंगाई का सामना हर कोई कर रहा है। अपना देश छोड़कर विदेश में रहना तो और भी कठिन है। क्योंकि वहां आपके हिसाब की हर चीज नहीं मिल सकती। कई ऐसे पकवान आपको भूलने पड़ते हैं, जो आप यहां रोजाना खाया करते थे। देसी खानों की तो बात ही कुछ और है। खैर, लंदन में रह रहे इस शख्स के साथ ऐसा कुछ हुआ सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। इनको परवल खाना था लेकिन वे नहीं खा पाए। आइए जानते हैं वजह... ट्विटर पर ओमकार खांडेकर नाम के एक शख्स ने एक पोस्ट शेयर की है। इसमें लंदन के एक बाजार में कुछ सब्जियों की तस्वीर दिखाई गई है। हरी मिर्च, टमाटर, भिंडी, करेला और परवल भी मौजूद है। हालांकि, जब इनकी कीमतों पर आपकी नजर जाएगी तो आप हैरान रह जाएंगे। एक किलो परवल की कीमत 8.99 पाउंड थी, जो भारतीय रुपये के हिसाब से देखें तो लगभग 919 रुपये। जी हां, आपने सही पढ़ा। पोस्ट के कैप्शन में भी उन्होंने यही लिखा है। लंदन अच्छा है और 900 रुपये किलो में परवल को छोड़कर यहां सब कुछ ठीक है। जाहिर है पोस्ट देखते ही देखते वायरल हो गई। इसने ऑनलाइन लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचा। सोशल मीडिया यूजर्स इसे देखकर हैरान रह गए। कई लोगों ने इस पर कमेंट्स भी किए हैं। एक यूजर ने लिखा, जब रोम में हो तो परवल मत खाओ भाई। एक अन्य यूजर ने कमेंट किया, और उस परवल का स्वाद अच्छा नहीं रहेगा। बता दें कि भारत में सभी मौसम में हरी और ताजी सब्जियां मिलती है। क्योंकि यहां पर साल भर इसकी पैदावार होती रहती है। लेकिन विदेश में भारत से तमाम सब्जियां भेजी जाती हैं। फूड एंड एग्रीकल्चर ऑर्गेनाइजेशन के आकड़ों के मुताबिक आलू, प्याज, फूलगोभी, बैंगन और पत्ता गोभी उत्पादन के मामले में भारत विश्व में दूसरे स्थान पर है। और इनमें से तमाम तरह की सब्जियों का दुनियाभर में निर्यात किया जाता है।

अपनी सरकार के खिलाफ आवाज उठाएं सिंधिया : दिग्विजय

लगाया आरोप- बीजेपी में तो साध लिए हैं चुप्पी कांग्रेस में तो मुखर थे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

शाजापुर। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह ने केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया पर तीखा हमला किया है। उन्होंने मध्यप्रदेश के प्रमुख मुद्दों पर उनकी चुप्पी को लेकर सवाल उठाया। मध्यप्रदेश के दो बार के पूर्व मुख्यमंत्री ने पूछा कि क्या सिंधिया बीजेपी के अधूरे वादों को लेकर सड़कों पर उतरने की हिम्मत करेंगे, जैसा कि उन्होंने कांग्रेस में रहते हुए किया था।

सिंह ने यह भी दावा किया कि सिंधिया ने खुद अपने गृह जिले ग्वालियर में कृषि ऋण के प्रमाणपत्र बांटे थे। शाजापुर में दिग्विजय सिंह ने कहा कि आप (सिंधिया) ने 2018 के विधानसभा चुनाव से पहले किए गए वादे पूरे नहीं होने की बात कहकर कांग्रेस छोड़ दी थी। तब आपने मध्यप्रदेश की जनता के लिए सड़कों पर उतरने की चेतावनी दी थी। मैं आज आपसे पूछ रहा हूं कि क्या किसानों के कर्ज माफ किए गए हैं? बेरोजगारी और स्कूली शिक्षकों की भर्ती से जुड़े मुद्दे हल हो गए? लाखों पद खाली हैं, जबकि बैकलॉग भी नहीं भरे गए हैं।

चुनाव नजदीक आते ही शिवराज को याद आए वादे

सिंह ने कहा, मुझे पता चला है कि चुनाव नजदीक आते ही मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अब तक 2,000 से अधिक वादे किए हैं। पिछले 18 वर्षों में किए गए वादों का क्या हुआ? क्या सिंधिया अब इन अधूरे वादों को लेकर सड़कों पर उतरने की हिम्मत करेंगे? सिंह ने यह भी दावा किया कि कमलनाथ के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार ने 2 लाख रुपए तक के कृषि ऋण माफ करने की प्रक्रिया शुरू कर दी थी, जिसका वादा पार्टी ने अपने चुनावी घोषणापत्र में किया था। उन्होंने कहा, कृषि ऋण माफ करने की प्रक्रिया शुरू की गई और पहले दौर में 50,000 रुपये तक के ऋण माफ कर दिए गए और प्रमाणपत्र भी वितरित किए गए। हालांकि, बिकाऊ विधायकों का एक समूह बीजेपी में चला गया और 15 महीने के भीतर कांग्रेस को सत्ता से बेदखल कर दिया। सिंह ने यह भी कहा कि जिन विधायकों को कमलनाथ और कांग्रेस पर भरोसा था, उन्होंने विश्वासघात नहीं किया लेकिन जिन्हें राजा, महाराजा कहा जाता है, उन्होंने पार्टी छोड़ दी।

ट्रक से भिड़ी कार एक बच्चे समेत तीन लोगों की मौत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

वाराणसी। चंदौली में सदर कोतवाली क्षेत्र के समीप नेशनल हाईवे पर शुक्रवार की सुबह रफ्तार का कहर देखने को मिला। जहां कार ने अनियंत्रित होकर सड़क किनारे खड़ी ट्रक में टक्कर मार दी। इस घटना में तीन लोगों की मौत हो गई,जबकि चार अन्य लोग घायल हो गए। जिन्हें जिला अस्पताल में प्राथमिक उपचार के बाद वाराणसी ट्रामा सेंटर रेफर कर दिया। फिलहाल पुलिस शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज अग्रिम कार्रवाई में जुटी है। वहीं मृतक पुत्र, साला बताए जाते हैं। वहीं परिजनों को जानकारी होते ही कोहराम मच गया।

बताया जा रहा है कि शुक्रवार की अलसुबह झांसी के समीप नेशनल हाइवे पर ट्रक और कार की जोरदार टक्कर हो गई। टक्कर की इतनी जोरदार थी कि कार के परखच्चे उड़ गए। घटना के बाद मौके पर लोगों की भारी भीड़ एकत्र हो गई। स्थानीय लोगों ने पुलिस व एम्बुलेंस को सूचना दी। सूचना के बाद मौके पर पहुची पुलिस ने एम्बुलेंस की मदद से सभी को पंडित कमलापति त्रिपाठी संयुक्त जिला अस्पताल पहुँचाया। वहीं तीनों मृतकों के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया । मृतकों में पिता-पुत्र समेत तीन लोगों की मौत हो गई। राजकिशोर सिंह (35 वर्ष) व आरुष सिंह (5 वर्ष) पिता पुत्र है। जबकि शैलेश पटेल (22 वर्ष) साले व मृतक आरूष मामा बताया जाता है। जबकि चार अन्य लोग शारदा (45 वर्ष), राधिका (65 वर्ष), रुचि (16 वर्ष), खुशबू (17 वर्ष) गंभीर रूप से घायल हो गए। वहीं घायल शारदा की हालत गंभीर बताई जाती है।

चालक व एक महिला बाल-बाल बची

इसके अलावा चालक व एक महिला बाल बाल बच गई। कार में सवार सभी लोग बिहार के रोहतास जिले के निवासी है। कार चालक दीपक कुमार पटेल ने बताया कि बिहार के रोहतास जिले से कार सवार सभी लोगों को लेकर विंध्याचल देवी दर्शन के लिए जा रहा था. तभी अचानक नींद आ गई। जिसके चलते यह हादसा हुआ।इस बाबत सदर इंस्पेक्टर राजीव प्रताप सिंह ने बताया कि हादसे में 3 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि चार लोग गंभीर रूप से घायल हो। सभी को इलाज के वाराणसी ट्रामा सेंटर भेजा गया है।

प्रदेश के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचें कार्यकर्ता : आजाद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जम्मू। डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव आजाद पार्टी (डीपीएपी) के नेता और कार्यकर्ता सदस्यता अभियान को तेज करें। यह निर्देश डीपीएपी के अध्यक्ष गुलाम नबी आजाद ने को जम्मू में मध्य जोन के पदाधिकारियों के साथ हुई बैठक में दिए। पार्टी को मजबूत बनाने के लिए रणनीति भी बनाई गई। उन्होंने कहा कि पार्टी में विश्वास करके बड़ी संख्या में लोग शामिल हो रहे हैं। कार्यकर्ता जमीनी स्तर पर लोगों तक पहुंचने में सफल हो रहे हैं, लेकिन अभी भी प्रदेश के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचने की जरूरत है।

आजाद ने कहा कि डीपीएपी एकमात्र पार्टी है जो सभी वर्गों और समुदायों को एक साथ लाने और जम्मू-कश्मीर की सबसे बड़ी राजनीतिक ताकत के रूप में उभरने की क्षमता रखती है। पार्टी की स्थापना जम्मू-कश्मीर के लोगों के बुनियादी अधिकारों को सुरक्षित करने के लिए एक बुनियादी सिद्धांत के साथ की गई है और हम इसके लिए लड़ेंगे। पार्टी के सभी स्तर पर योग्यता सुनिश्चित की जाए। महासचिव आरएस चिब ने ब्लाक समितियों का जल्द गठन करने के साथ प्रत्येक व्यक्ति को सदस्यता अभियान में शामिल करने को कहा। इस दौरान जीएम सरूरी, जुगल किशोर शर्मा, मजीद वानी, विनोद मिश्रा आदि मौजूद रहे।

माफिया की सूची मनमानी व राजनैतिक : अमिताभ ठाकुर

कई खूंखार अपराधियों के नाम छोड़े गए

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। अधिकार सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमिताभ ठाकुर ने उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा जारी माफिया और अपराधियों की सूची को पूरी तरह मनमाना और राजनैतिक बताया। उन्होंने कहा कि मात्र राजनैतिक कारणों से इस सूची में तमाम ऐसे नाम जानबूझ कर छोड़ दिए गए हैं, जिनपर दर्जनों बेहद संगीन मुकदमे हैं और जिनके अपराधिक शोहरत से सभी परिचित हैं।

उन्होंने कहा कि विधायक सुशील सिंह पर 25 से अधिक मुकदमे रहे हैं, किंतु उनका नाम सूची से गायब है, इसी तरह डबल मर्डर में सजायाफ्ता और 25 मुकदमे वाले अजय मरदह, दर्जनों मुकदमे लिए सुजीत सिंह बेलवा, मनीषा कोइराला के मैनेजर का हत्यारा अबू सलेम का साथी उपेंद्र सिंह गुड्डू, पूर्व प्रमुख चिरई गांव पप्पू भौकाली और बाहुबली के रूप में ज्ञात एमएलसी विनीत सिंह का नाम सूची से गायब है। इतना ही नहीं, बृजेश सिंह के धुर विरोधी वर्षों से फरार इंद्र देव सिंह, जेल से भागे हुए सुनील यादव तथा फरार अजीम के नाम भी लिस्ट से गायब हैं। अमिताभ ठाकुर ने कहा कि ये नाम सिर्फ वाराणसी क्षेत्र से हैं, यही स्थिति पूरे प्रदेश में है, जो पुलिसिया कार्रवाई की हकीकत को सामने लाता है।

इंदौर से चुनाव लड़ेंगे सोनू सूद!

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

इंदौर। इंदौर में एक निजी कार्यक्रम में शामिल होने पहुंचे सोनू सूद ने मीडिया से चर्चा के दौरान राजनीति में आने के सवाल पर कहा कि बॉलीवुड में एक्टिंग भी एक बेहतर जगह है यह धारणा रहती है कि जब भी कोई इंसान अच्छा काम करता है तो है राजनीति में आए। राजनीति में आए बिना भी अच्छा काम किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि भविष्य में कभी राजनीति में आना होगा तो आएंगे।

वहीं, सोनू के इस जवाब पर इंदौर सांसद शंकर लालवानी ने हामी भरते हुए कहा कि सोनू सूद को राजनीति में भी आना चाहिए। सोनू सूद ने इंदौर की खूब तारीफ करते हुए कहा कि इंदौर से उनके काफी पुराने रिश्ते रहे हैं उन्होंने इंदौर की कई जगहों का नाम लेते हुए कहा कि वह यहां बहुत पहले से आते रहे हैं उन्होंने कहा कि इंदौर में उनकी खुद की जगह भी है और जब भी उनको समय मिलता है वह इंदौर जरूर आते हैं।

आखिरकार दिल्ली को मिल ही गई सत्र की पहली जीत

कोलकाता नाइटराइडर्स को चार विकेट से हराया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली कैपिटल्स ने अरुण जेटली स्टेडियम में आईपीएल के मौजूदा सीजन में अपनी पहली जीत हासिल की। दिल्ली ने कोलकाता नाइटराइडर्स को चार विकेट से हरा दिया। टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए कोलकाता ने 20 ओवर में 127 रन बनाए थे। जेसन रॉय ने 39 गेंदों में 43 रन और आंद्रे रसेल ने 31 गेंदों में 38 रन की नाबाद पारी खेली थी। जवाब में दिल्ली की टीम एक वक्त आसानी से जीत की ओर बढ़ रही थी।

डेविड वॉर्नर 57 रन बनाकर आउट हुए थे। हालांकि, इसके बाद लगातार नियमित अंतराल पर विकेट गिरते रहे और कोलकाता ने मैच में वापसी की। आखिर में दिल्ली को छह गेंदों में सात रन की जरूरत थी। अक्षर पटेल ने जीत दिला दी। अक्षर ने 22 गेंदों में 19 रन की नाबाद पारी खेली। वहीं, ललित यादव चार रन बनाकर नाबाद रहे।

किस्मत से जीते बल्लेबाजी सुधारें : सौरव गांगुली

इस जीत के बावजूद दिल्ली कैपिटल्स फ्रेंचाइजी के डायरेक्टर सौरव गांगुली खुश नहीं हैं। उन्होंने टीम के बल्लेबाजों की क्लास लगाई। गांगुली ने कहा कि हम इस मैच में भाग्यशाली रहे। मैच के बाद सौरव गांगुली ने कहा, आज हमारे साथ किस्मत थी। हमने इस सीजन से पहले भी अच्छी गेंदबाजी की थी, लेकिन समस्या बल्लेबाजी है। हमें वापस जाने और अपने आप को देखने की जरूरत है। हमें यह देखने की जरूरत है कि बेहतर कैसे हो सकते हैं। स्पिनरों ने अच्छी गेंदबाजी की। मुझे पता है कि हमने अच्छा नहीं खेला है और हमें बेहतर बल्लेबाजी करने का तरीका खोजने की जरूरत है। गांगुली ने आगे कहा, हम लड़कों के साथ कड़ी मेहनत करेंगे और उन्हें फॉर्म में वापस लाएंगे।

प्रदेश में अदा की गई अलविदा की नमाज

लखनऊ। प्रदेश भर की मस्जिदों में अलविदा की नमाज अदा की गई। इमाम ईदगाह मौलाना खालिद रशीद फरंगी महली ने बताया कि शाम को ईद का चांद देखा जाएगा। इसी दिन चांद रात होगी और लोग खरीदारी भी करेंगे। शिया और सुन्नी समुदाय की चांद कमेटियां देर शाम चांद दिखने का एलान करेंगी। चांद दिखा तो 22 को और नहीं दिखा तो 23 अप्रैल को ईद मनाई जाएगी। टीले वाली मस्जिद, आसिफी इमामबाड़ा व ऐशबाग ईदगाह सहित सभी प्रमुख मस्जिदों में आलविदा की नमाज हुई। टीले वाली मस्जिद में मौलाना फजले मन्नान नमाज अदा करायी। इस मौके पर आसिफी इमाम बाड़ा में दोपहर दो बजे अंतर्राष्ट्रीय कुद्स दिवस पर मो.रजा हैदर के संयोजन में विरोध प्रदर्शन भी हुआ। सुरक्षा सुरक्षा व्यवस्था का पूरा इंतजाम रहा। लखनऊ में आधी आबादी को पूरी आजादी की मंशा के अनुरूप ऐशबाग ईदगाह में पहली बार महिलाओं को रमजान के महीने में मस्जिद में नमाज पढ़ने का इंतजाम किया गया।

पंच प्रण के संकल्प से भारत बढ़ेगा और आगे: पीएम मोदी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को 16वें सिविल सेवा दिवस कार्यक्रम के समापन सत्र और पुरस्कार समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। दिल्ली के विज्ञान भवन में सुबह 11 बजे शुरू हुए कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह मौजूद रहे। देश में विभिन्न सरकारी विभागों में कार्यरत सभी अधिकरियों के कार्यों की पहचान और प्रोत्साहन के लिए हर साल 21 अप्रैल को सिविल सेवा दिवस मनाया जाता है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि आप सभी को सिविल सेवा दिवस की बहुत-बहुत शुभकामनाएं। इस साल का सिविल सेवा दिवस बहुत अधिक महत्वपूर्ण हैं। यह ऐसा समय है जब देश अपनी आजादी के 75 वर्ष पूरे किए हैं। देश को आजादी के अमृतकाल तक लाने के लिए उन अधिकरियों की बड़ी भूमिका रही जो 15-25 साल पहले इस सेवा में आए हैं और अब आजादी के इस अमृतकाल में उन युवा अधिकारियों की भूमिका सबसे बड़ी है जो अगले 15-25 साल इस सेवा में रहने वाले हैं।

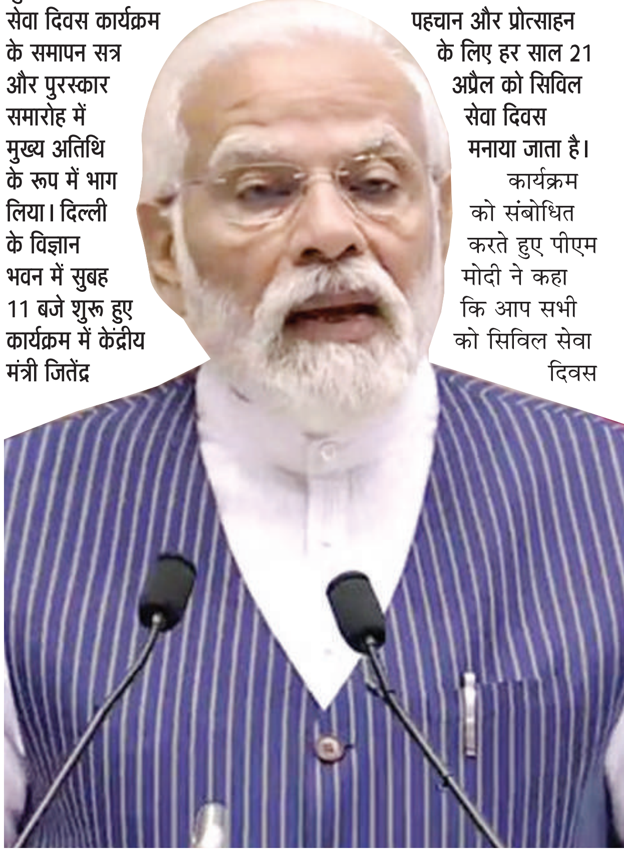

हमारे पास समय कम है लेकिन सामर्थ्य भरपूर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, मैं आज भारत के हर सिविल सेवा अधिकारी से यही कहूंगा कि आप बहुत भाग्यशाली हैं। आपको इस कालखंड में देश की सेवा का अवसर मिला है... हमारे पास समय कम है लेकिन सामर्थ्य भरपूर है, हमारे लक्ष्य कठिन हैं लेकिन हौसला कम नहीं है, हमें पहाड़ जैसी ऊंचाई भले ही चढ़नी है, लेकिन इरादे आसमान से भी ज्यादा ऊंचे हैं।

यूपी के दो आईएएस अफसर सम्मानित

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा नवाचार के अंतर्गत राष्ट्रीय कोविड-19 टीकाकरण कार्यक्रम के लिए स्वास्थ्य मंत्रालय से केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव राजेश भूषण को लोक प्रशासन में उत्कृष्टता के लिए प्रधानमंत्री पुरस्कार 2022 दिया गया। प्रधानमंत्री मोदी ने लोक प्रशासन में उत्कृष्ट कार्य करने वाले देश के अन्य चुनिंदा आईएएस अधिकारियों के साथ रामपुर के डीएम रविंद्र कुमार मंदर और चित्रकूट के डीएम अभिषेक आनंद को पीएम अवार्ड से सम्मानित किया। यूपी लगातार इस सम्मान को हासिल करने वाला राज्य बना हुआ है।

जवान शहीद हो रहे हैं, सरकार राजनीति कर रही: संजय राउत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। संजय राउत ने केंद्र सरकार पर निशाना भी साधा। संजय राउत ने कहा कि केंद्र सरकार विपक्ष को दबाना चाहती है। हमारे जवान शहीद हो रहे हैं और सरकार राजनीति कर रही है। जम्मू-कश्मीर का नया पुलवामा मुद्दा सामने आया है।

वहीं शवसेना (यूबीटी) नेता संजय राउत और एनसीपी नेता अजीत पवार के बीच शीत युद्ध देखने को मिल रहा है। संजय राउत ने कहा कि उन्हें नहीं पता कि एनसीपी में क्या हो रहा है। दरअसल, संजय राउत से अजीत पवार को लेकर सवाल पूछा गया था। इसके जवाब में उन्होंने कहा, मैं शरद पवार से मिला था। हमारी एमवीए की बैठकें होती रहती हैं, शरद पवार एक वरिष्ठ नेता हैं, कोई आश्चर्य की बात नहीं। पता नहीं एनसीपी के साथ क्या हो रहा है और यह उनका आंतरिक मामला है। लोग मिलते रहते हैं, इसमें कोई नई बात नहीं।

संजय राउत ने कहा कि वह केवल एनसीपी प्रमुख शरद पवार को सुनते हैं। पत्रकारों से बात करते हुए संजय राउत ने कहा कि अगर कड़वा सच किसी को भी चोट पहुंचता है, तो वह क्या कर सकते हैं।

» विपक्ष को दबाना चाहती है मोदी सरकार

अपना काम करें राउत : पवार

वहीं, अजित पवार ने इसके जवाब में कहा कि अन्य दलों के नेता एनसीपी के प्रवक्ताओं की तरह व्यवहार कर रहे हैं। अजीत ने नसीहत देते हुए कहा कि बेहतर होगा कि वह सिर्फ अपना काम करें।

पुंछ: आतंकी हमले की जांच करेगी एनआईए

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पुंछ। जम्मू-कश्मीर के पुंछ में सेना की गाड़ी पर आतंकी हमले की जांच फॉरेंसिक और आला अधिकारियों की टीम कर रही है। हमले में 5 जवान शहीद हुए हैं। सर्च ऑपरेशन जारी है. इधर, जम्मू के लिए राष्ट्रीय जांच एजेंसी रवाना हो गई है। जम्मू-कश्मीर के पुंछ में कल सेना के एक ट्रक में आग लग गई थी।

सेना ने इसे आतंकी हमला बताया है, माना जा रहा है कि कल दोपहर 3 बजे वाहन पर ग्रेनेड से हमला किया गया। शहीद जवानों में 4 जवान पंजाब के हैं, जबकि एक ओडिशा, हमला भिंबर गली और पुंछ के बीच राजौरी सेक्टर में हुआ। आतंकवादियों ने भारी बारिश और कम दृश्यता का फायदा उठाते हुए सेना की गाड़ी पर फायरिंग की। इस दौरान ग्रेनेड के संभावित हमले से गाड़ी में आग लग गई, जिसमें पांच जवानों की मौत हो गई, हमले में एक जवान गंभीर रूप से घायल भी हुआ है।

'समलैंगिक विवाह कानून मामला जानबूझकर लटका रहा केंद्र'

» समर्थन में आए ममता बनर्जी के भतीजे अभिषेक बनर्जी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। देश में समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता के मामले में सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हो रही है। अदालत इसे मान्यता देगा या नहीं, इसका पता कुछ ही दिनों में चल जाएगा। इसी बीच, टीएमसी प्रमुख और पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी के भतीजे अभिषेक बनर्जी ने समलैंगिक विवाह का समर्थन किया है।

टीएमसी महासचिव अभिषेक बनर्जी ने कहा कि हर किसी को अपना जीवनसाथी चुनने का अधिकार है। बनर्जी ने कहा कि केंद्र सरकार इसे जानबूझकर लटका रही है।

हर किसी को अपना साथी चुनने का अधिकार

टीएमसी नेता ने आगे कहा, अगर मैं एक आदमी हूं और मुझे आदमी पसंद है, अगर मैं महिला हूं, मुझे महिला पसंद है। प्रेम की कोई सीमा नहीं होती। हर किसी को प्रेम करने का अधिकार है। हर किसी को अपना साथी चुनने का अधिकार है, फिर चाहे वह महिला हो या पुरुष।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक **बबिता चतुर्वेदी** के लिए **4पीएम** आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (यूपी) से मुद्रित एवं प्रकाशित। **प्रधान संपादक**- अर्चना दयाल, **संपादक** - संजय शर्मा, **विधि सलाहकार:** सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, **वित्तीय सलाहकार:** संदीप बंसल, **कार्टूनिस्ट:** हसन जैदी, **दूरभाष:** 0522- 4078371 | **Email:** daily4pm@gmail.com | **website:** www.4pm.co.in | **RNI-UPHIN/2015/62233** डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।